तृतीय अध्याय

जैनेंद्रके उपन्यासोंके पुरुष पात्रोंकी विशेषताएँ.

तृतीय अध्याय

जैनेंद्रके उपन्यासोंके पुरुष पात्रोंकी विशेषताएँ

जीवनकी विविधताओंको रखकर जैनेंद्रजीने अपने उपन्यासोंमें आजतकके अछूते प्रश्नोंको लेकर उन्हें प्रकाशित करनेका प्रयास किया है. जिस ओर साहित्यकारोंका ध्यान नहीं गया था, उस ओर जैनेंद्रजीने अपने उपन्यास जगतको मोडा है. जैनेंद्रके पात्र सामान्य नहीं, बल्कि असामान्य हैं. नौकरसे लेकर जजतक और अशिक्षितसे लेकर सुशिक्षित, विदेशी शिक्षा प्राप्त आदमियोंतक उपन्यासकारने लेखनी चलायी है. कहीं कहीं पात्रोंका चरित्र दार्शनिक विवरणोंके कारण बोझील बन गया है. लेकिन चिंतनकी दिशा, वैचारिक दृष्टिकोण आदिके कारण जैनेंद्रके पात्र सामान्य होकर भी असामान्य बन गये हैं. वैसे देखा जाय तो, जैनेंद्रजीके उपन्यासोंकी नारियाँ अधिक बलवती हैं. जिनके सामने पुरुष-पात्र दबे हुये से लगते हैं. फिर भी इन पुरुष-पात्रोंकी अपनी निजी समस्याएँ और व्यथाएँ हैं. जिनके कारण नारी-प्रधान उपन्यासों-पर भी वे अपनी अमिट छाप छोड देते हैं. जैनेंद्रजीके उपन्यासोंमें निम्नांकित पुरुष पात्र मिलते हैं.

१. "परख"

१. सत्यधन २. बिहारी ३. वकील भगवत दयाल
४. मुंशी होशियार बहादुर ५. विपिन
६. श्रीमंत वृध्द ७. एक मुलकिल ८. अग्रवाल बनिया
९. मि. एडवोकेट.

२. " सु नी ता "

१, श्रीकांत २. हरिप्रसन्न ३. बाबूजी ४. रामदयाल (नौकर)
५. चंद्रसेन ६. सत्याका भाई ७. धन्नू (नौकर) ८.साईस.

३. " त्या ग प त्र "

१, प्रमोद २. प्रमोदके पिता ३, प्रमोदके फूफाजी
४, शिलाका भाई (डाक्टर) ५. बनिया, ६.डाक्टर साहब
७. बंसी (नौकर) ८. सिविल सर्जन ९. सतीश
१०. मास्टरजी ११. वकील मित्र.

४. " कल्याणी "

१, वकील (कथा कहनेवाला) २. श्रीधर ३.डा.असरानी
४, प्रबाल ५. रायसाहब ६. डा. भटनागर
७, स्थानीय सार्वजनिक नेता. ८. श्रीमान ब्रजपाल
९. प्रीमियर १०. श्रीमान देवलालीकर. ११.किसना
१२. डोरी १३. रामलाल (नौकर)

५. " सु ख दा "

१, कांतस्वामी २. हरीश ३. मि.लाल ४.गंगासिंह
५, विनोद ६. हीरासिंह ७. प्रभात ८. मि.कोडली
९. केदारनाथ १०. नरेश ११. शर्माजी.

६. " नि व र्त "

१. जितेन २. नरेशचंद्र ३. एस.पी.चड्ढा
४. राय रामचरण ५. डा.कपूर ६. पठान
७. जौहरी ८. मिन्नीके पिताजी.

७. " त्य ती त "

१. जयंत २. पूरी साहब ३. संपादक महोदय
४. कलुआ ५. कुमार ६. डा. कपिला.

८. " जयवर्धन "

१. विलवर हूस्टन २. जयवर्धन ३. आचार्यजी
४. चिदानंदस्वामी ५. डा.नाथ ६. इंद्रमोहन

९. " मुक्तिबोध "

१. सहाय २. कुंवर साहब ३. ठाकुर महोदयसिंह
४. भानुप्रताप ५. विक्रम ६. बी.पी. ८. वीरेश्वर
९. दर बाबू.

१०. " अनंतर "

१. प्रसाद २. आदित्य ३. गुरुआनंद माधव ४. प्रकाश

११. " अनामस्वामी "

१. सर.पी. दयाल २. अनामस्वामी
३. शंकर उपाध्याय ४. कुमार साहब ५. तेजूका मित्र "पुतक"

ऊपर निर्दिष्ट पात्रोंका समावेश जैनेंद्रजीके उपन्यासोंमें हुआ है. समाजके विभिन्न धरातलोंसे संबंधित ये पात्र रहे हैं. जैनेंद्रजीने

इन पात्रोंका चित्रण करते समय संकुचन, मानसिक द्वंद्व, ग्रंथियाँ और सत्यनिष्ठा इन चार विधियोंका विशेष सहारा लिया है. कभी कभी छोटे-छोटे संकेतोंसे व्यक्तिके चरित्रका कोई समूचा पहलू वे आलोकित करते हैं, तो कभी मानसिक द्वंद्वका चित्रण करके पात्रोंको जैनेंद्रजी प्राणवत् बनाते हैं. पात्रोंकी मनः ग्रंथियोंका चित्रण उपन्यासकारने अधिक उत्साहसे किया है. जैनेंद्रके उपन्यासोंके पुरुष पात्र अपनी कुंठाओंके कारणही असाधारण बन गये हैं. लगभग नब्बे प्रतिशत पात्र आस्था और सत्यके प्रति आग्रहशील हैं.

"सुनीता, कल्याणी, सुखदा और विवर्त" उपन्यासोंमें क्रांतिकारी पुरुष पात्र आये हैं. जो देशकी स्वाधीनताकी प्राप्तिके लिए और सामाजिक विषमताको नष्ट करनेके लिए उद्यत हैं. केवल "विवर्त" उपन्यासके क्रांतिकारी पात्र (जितेन, पठान आदि) नायिका भुवनमोहिनी को कष्ट पहुँचाते हैं. अन्य सभी, क्रांतिकारी नायिकाओंकी सहायतासे ही आगे बढ रहे हैं. ताज्जुबकी बात यह है की ये सभी क्रांतिकारी वकील, जज अथवा डाक्टरके घरमेंही आश्रय पाते हैं. जहांपर उन्हें आराम तो मिलता है, साथ-ही-साथ धनकी भी सहायता प्राप्त होती है.

अधिकांश पात्र सुशिक्षित एवं प्रतिष्ठाप्राप्त नागरिक हैं. वे कलाप्रिय भी हैं. हरिप्रसन्न क्रांतिकारी होकर भी चित्रकारी जानता है. फोटो भी ठीक कर सकता है. जयंत (व्यतीत) भावुक रहनेसे कविताएँ भी करता है. ये भावुक पात्र अधिक संवेदनशील रहे हैं. और सामान्य पात्रोंसे इनका व्यवहार पृथक् रहा है. पात्रोंका चरित्रचित्रण साकार करनेके लिए उपन्यासोंमें अंतर्द्वंद्वका प्रयोग किया है. " पुरुष पात्रोंमें भी अंतर्द्वंद्व है. यद्यपि वह उतना

गहन नहीं हो पाता जितना स्त्री पात्रोंमें. पुरुष पात्रोंमें यह द्वंद्व प्रायः प्रेमकी अतृप्तिको लेकर है. जयंत (व्यतीत) में, इसका अति सुंदर रूप है. पुरुष पात्र अपनी प्रेमिकाओंसे दूर भी होना चाहते हैं, और चाहकर दूर नहीं भी हो सकते."[१]

जैनेंद्रके उपन्यासोंके पुरुष पात्र आधुनिक विचारोंमें रहते हैं. स्त्री को केवल भोग्या रूपमें न देखकर उसे मित्र रूपमें भी देखना चाहते हैं. हरिप्रसन्नके मनमें सुनीताके प्रति आकर्षण पैदा होकर भी वह क्रांतिकारियोंके लिए उसकी सहायता चाहता है. नरेशचंद्र, जयंत, श्रीकांत आदि पति-पात्र अपनी पत्नियोंको खुला एवं स्वतंत्र व्यवहार करनेकी छूट प्रदान करते हैं. अन्योंके साथ उनका बढता हुआ स्नेह देखकर भी चुप रहते हैं. प्रेमके विषयमें इन पात्रोंमें त्रिकोणात्मक स्थिति पायी जाती है. शीलाका भाई (त्यागपत्र), प्रीमियर(कल्याणी), जितेन (विवर्त) आदि असफल प्रेमी रहे हैं. क्योंकि इनकी प्रेयसियोंके विवाह अन्यत्र हो जाते हैं. अतः शीलाका भाई, प्रीमियर, जितेन अविवाहित रहकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं. जितेन खरीदी हुयी "तिन्नी" के साथ बहन-सा व्यवहार करता है. लेकिन ऐसे पात्रोंकी यहाँ कमी ही है. क्योंकि जैनेंद्रके उपन्यासोंमें " भाभीवाद" प्रायः समाप्त ही हो गया है. दूसरोंके स्त्रियोंकी प्रति देखनेकी इनकी दृष्टि भोगपरक एवं विलासपरक रही है. गि. लाल, चिदानंदस्वामी, शंकर उपाध्याय, कोयलेवाला आदि पात्र काम-अभुक्तिसे पीडित दिखायी देते हैं.

" परख " से लेकर "अनामस्वामी" तकके अनेक औपन्यासिक पुरुष पात्र अच्छे-अच्छे पदोंपर विराजमान हैं. रोटीकी समस्या इनके सामने नहीं है. अधिकांश पात्र न्यायपालिकाओंसे संबंधित रहे हैं.

१- जैनेंद्रके उपन्यासोंका शिल्प - ओमप्रकाश शर्मा
प्रथम संस्करण १९७५ पृ. ७२.

प्रमोद, रायरामचरणदास जज हैं, तो श्रीकांत, सत्यधन, भगतदयाल आदि पात्र वकील रहे हैं. डाक्टर, उद्योगपति पात्रोंकी भी यहां भरमार है। कल्याणी, जयवर्धन एवं मुक्ति बोध उपन्यासोंमें राजनीतिज्ञ पुरुष पात्र आये हैं. देशकी स्वाधीनताके बाद राजनीतिज्ञोंके मनमें उपजी हुयी स्वार्थवृत्तिके दर्शन सहाय, भानुप्रताप, विक्रम (मुक्तिबोध) आदि पात्रोंमें हमें होते हैं. "किसान" पात्रोंका चित्रण एक भी उपन्यासमें उपलब्ध नहीं हैं. केवल मुक्ति बोध उपन्यासके सहायबाबू ठाकूर महोदरसिंहके गांवमें जोकर खेती करना चाहते हैं. लेकिन यह बाहरी दिखावट है. उनका आंतरिक मन राजनीतिमें उलझा रहा है. उपन्यासोंमें ऊँचे परिवारोंका चित्रण रहनेसे और अधिकतर वातावरण देहातीका रहनेसे किसान पात्रोंका चित्रण यहांपर पाया नहीं जा सकता. उपन्यासोंके पुरुष पात्रोंमें विविधता रही है. " उपन्यासकारने प्रत्येक पात्रको विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान किया है. सामान्य दृष्टिसे मिलते-जुलते लगनेवाले पात्र भी किसी-न-किसी झीनी रेखासे अलग हो जाते हैं. ....सबका मानसिक स्तर पृथक् है और सब अपनी-अपनी यथावत् मानसिक उलझन के लिए स्वयं उत्तरदायी हैं. "[१]

व्यक्तिके मनके रहस्योंको उद्घाटित करनेके लिए - जैनेंद्रजीने पुरुष पात्रोंका चरित्र मनोविश्लेषणकी विधियोंसे साकार बनाया हैं. इन पात्रोंपर नारियोंके विचारोंका असर अधिक रहा है. जिससे इन पात्रोंके विचार दब गये हैं. परिस्थितियोंसे एवं समस्याओंसे मार्ग निकालनेके लिए इन पुरुष पात्रोंको स्त्रियोंकी सहायता लेनी पडती है. उपन्यासोंमें नारियाँ ही वातावरणोंकी निर्मिती करती हैं. और उनमें बिगाड भी उत्पन्न करती हैं. इसके लिए अपवाद केवल डा.अलरानी

---

१. उपन्यासकार जैनेंद्र - मूल्यांकन और मूल्यांकन - प्रथमसंस्करण १९७६ - पृ ६१-६२

(कल्याणी) एवं शंकर उपाध्याय (अनामस्वामी) रहे हैं. ये दोनों पात्र स्वयं परिस्थितियोंका निर्माण करते हैं. अन्य स्थानोंपर बहुतसे पुरुष-पात्र नारियोंके विचारोंको एवं नारीको अधिक महत्व दे रहे हैं. श्रीधर (कल्याणी) जैसे पात्रोंमें दूसरेकी प्रणय क्रीडाओं तथा प्रणय रहस्योंको छिपकर देखने या सुननेकी प्रवृत्ति पायी जाती है. श्रीधर कल्याणी संबंधी अपवादोंको इकट्ठा करके वकील साहबको (कथा कहनेवाला) सुनाता रहता है.

पुरुष पात्रोंमें घरेलु नौकर, कारके ड्राइवर कुछ अजीब ढंगसे पात्र बन गये हैं. क्योंकी ये पात्र मूर्तिवत हैं. जो कान होकर भी सुनते नहीं और आँखे रहनेपर भी कुछ देखते नहीं. घरमें चोरी होती है, मालकिन प्रेमीके साथ मौज उडाती हैं; फिर भी ये पात्र अपने मालिकोंसे कुछ कहते नहीं; हमेशा चुप एवं मौन रहते हैं. लेकिन इनमें ईमानदारी और प्रामाणिकताका अभाव नहीं है. अपना कर्तव्य सच्चे दिल और दिमागसे करते हैं. संपन्न व्यक्तियोंके प्रति न इनके मनमें घृणा है, न विद्रोह.

गांधीजीके अहिंसावादी विचार-धाराका असर उपन्यासोंके पुरुष पात्रोंपर है. जिससे वे आत्मपीडामें ही जीते हैं. दूसरोंको कष्ट पहुँचाते नहीं; बल्कि अन्योंका दुःख दूर करनेके लिए स्वयं कष्ट एवं दुःखमें रहते हैं. सत्यका स्वीकार करके प्रामाणिकताका व्यवहार करते हैं. " सत्यनिष्ठा" जैनेंद्रजीका आदर्श है. उपन्यासोंके (नरेशचंद्र, जयवर्धन, प्रमोद, कांत आदि) पात्र इसी तथ्यके अंतर्गत अपनी चारित्रिक विशेषताओंको आगे लाते हैं. छल एवं कपट उनके व्यक्तित्वोंमें नहीं है. वे नियतिवादी हैं. जींदगीमें जो, जैसा आये, उसका वे सहर्ष स्वीकार करते हैं. नियतिका लेखा-जोखा उनके लिए मान्य है.

अपना भाग्य वे स्वयं बनाते नहीं, बल्कि भाग्यके अनुसार अपनेको मोडते हैं. अविरत कष्ट और सत्य निष्ठाकी प्रवृत्ति उनमें पायी जाती है. शांतिकी खोज उन्हें है. अतः शांतिको प्रस्थापित करनेके लिए आश्रम निर्माण करनेकी बातें में उलझा जाते हैं.

जैनेंद्रजीके उपन्यासोंके पुरुष पात्र समाजके एक अभिन्न अंग हैं. लेकिन समाजमें रहकर भी वे समाजसे अलग होते जा रहें. सामाजिक विचारोंके प्रति उनके मनमें विद्रोह एवं उद्वेग होकर भी समाजके नीति-नियमोंको वे तोडना नहीं चाहते. समाजमें रहकर सामाजिक मांगल्याकी आकांक्षा वे रखते हैं. बहुतांश पात्रोंमें नपुंसकताकी प्रवृत्ति पायी जाती है. कापुरुषता और भीरुता ही इसका कारण रहा है.

::::::